१
अमृत सागर

अमृत सागर

प्रकाशक

हिमगिरि आध्यात्मिक संस्था

द्वितीय संस्करण - गुरुपौर्णिमा
३० जुलाई १९९६

प्रकाशक
हिमगिरि आध्यात्मिक संस्था,
अंधेरी, मुंबई-४०००५३

मुद्रण
राजा प्रकाशन
मुंबई

मूल्य श्रध्दा

★ सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

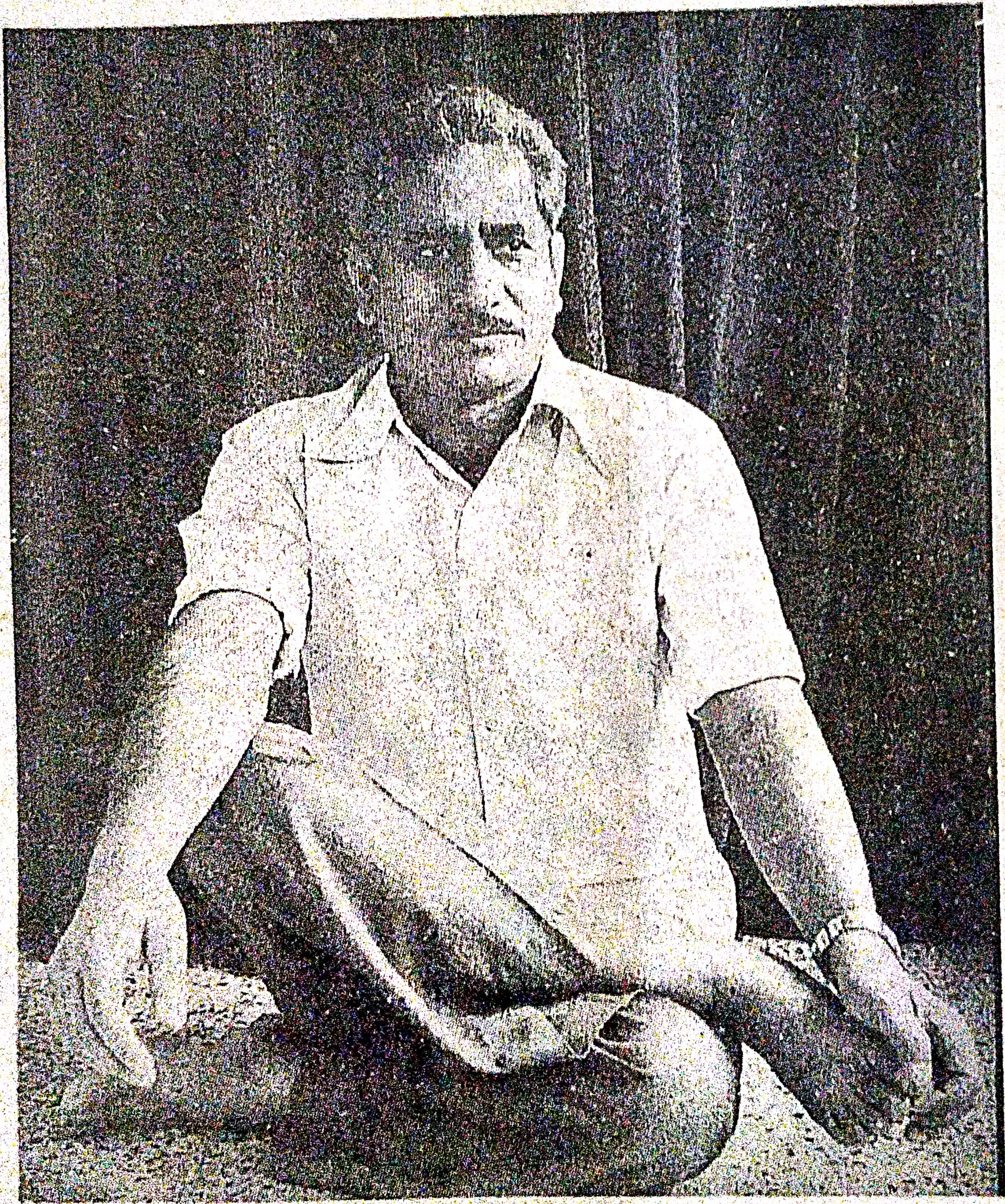

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

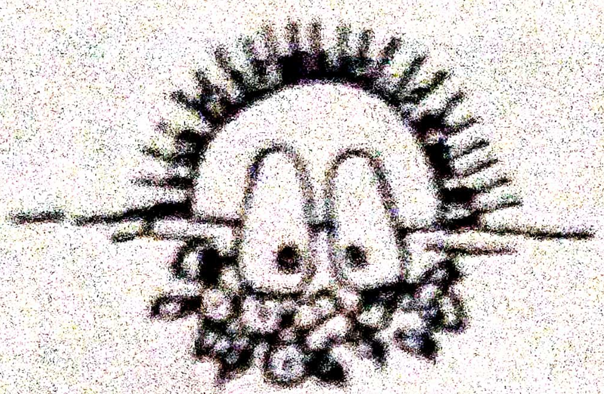

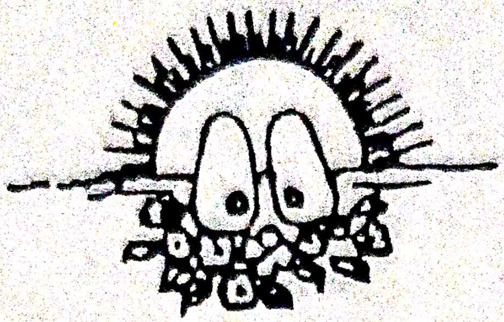

ऐ राहगीर ! क्यों भटक रहा है ?
मंजिल समन्दर है,
वह तेरे ही अंदर है,
अगर मन मन्दिर है !

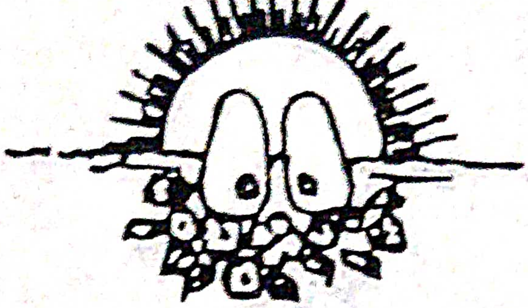

कितना अंतर है ?
यह अन्तर तेरे अन्दर है,
इसलिए इतना अन्तर है,
तेरे अन्दर यन्त्र ही यन्त्र है,
मन का मार्ग मन्त्र है।

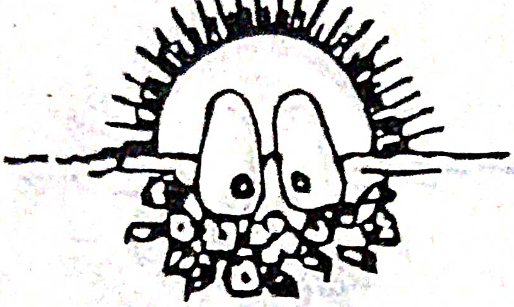

जब तक आसक्ति है,
वह कैसे आ सकती है ?
आसक्ति ऐसी चीज़ है -
जो कभी भी आ सकती है।

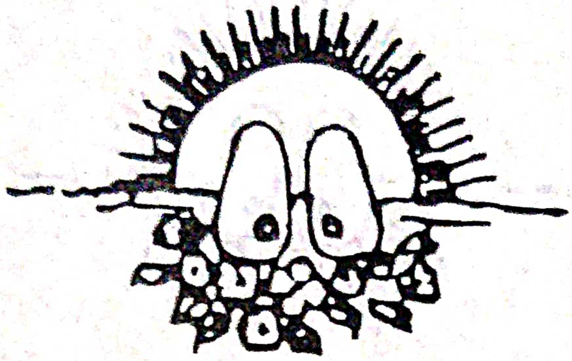

जैसा धन, वैसा तन
जैसा अन्न, वैसा मन।

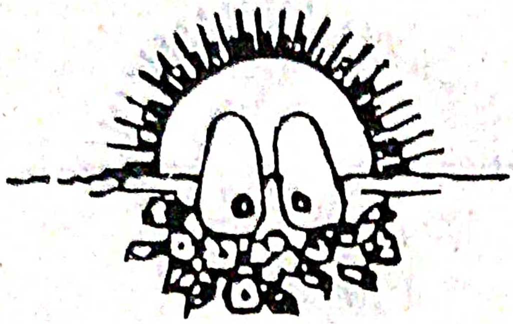

अज्ञानियों में तू-तू, मैं-मैं होती है,
ज्ञानियों में तड़क-भड़क होती है
मन की अवस्था दोनों में एक - सी होती है।

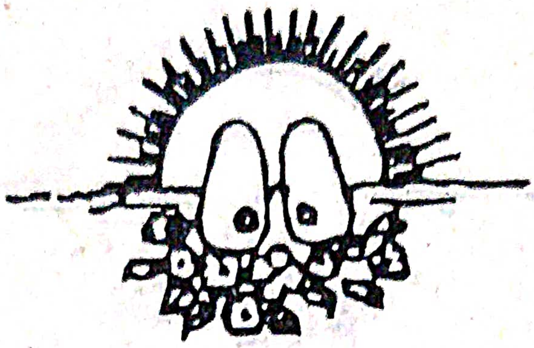

हल से धरती पाती तृप्ति -
हल से मन को मिलती मुक्ति !

गुरूर जाये -

तो

गुरु आये।

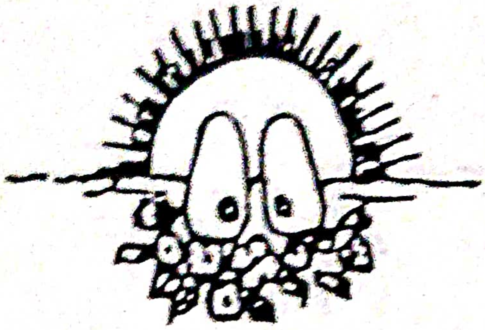

संसार समझने से
गुरु समाने से
प्राप्त होता है।

जीवन है धर्म - कर्म,
गुरु दूर करे सारे भ्रम।

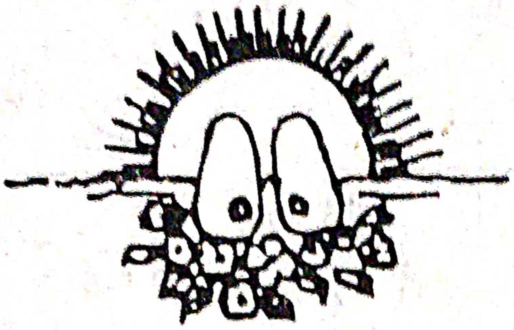

सब देखा-बटोरा जग में,
फिर भी न हुई पूर्ति
परिसीमा हो गयी सुख की
जब बैठी मन में गुरुमूर्ति !

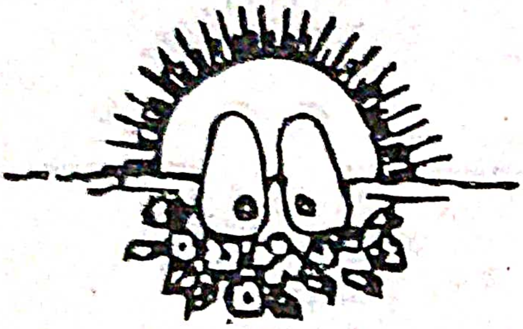

सत्य की जमीन पर,
भावना - कर्तव्य की खाद-मिट्टी से,
जीवन नाम के पौधे को
गुरु-चरणामृत का जल देकर
फूलों में संस्कारों की सुगन्ध हो
फलों में संस्कारों की मिठास हो।

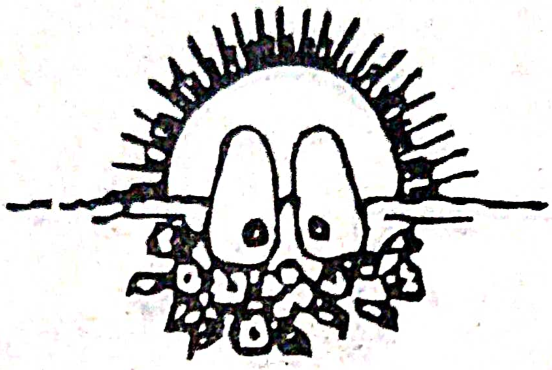

संसार साँपों के बिल में है।
मालिक फकीरों के दिल में है।

दुनिया धन में,
मालिक मन में।

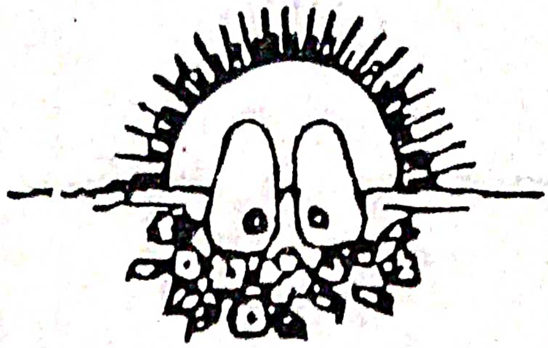

उसकी हर नियामत है महान।
जान सके, तो जान!

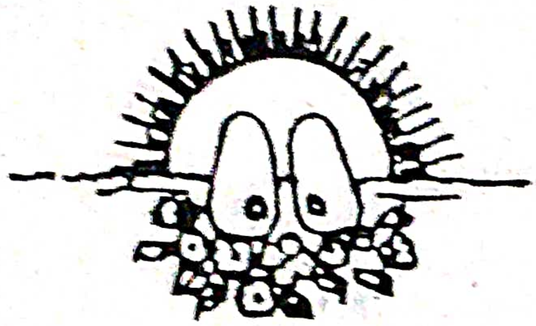

गुरु का दिल परमार्थी,
शिष्य का दिमाग स्वार्थी,
दिल - दिमाग का ले-ले स्थान
परमार्थी बन, हो कल्याण
पार ब्रह्म हो जाये प्राण।

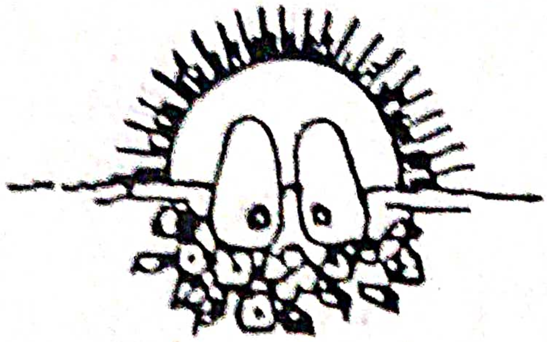

पारखी बनने से पहले यह जान
परख अपने को, खुद को पहचान,
गुरु से पूछ पहले अपना पता,
कुछ औरों की सुन, कुछ अपनी बता,
अपने को पढ़ - पढ़ा
पहुँचा दे खुद को, फिर औरों को पहुँचा
तब न होगा तेरा जीवन नश्वर
तुझ को मिल जायेंगे परमेश्वर।

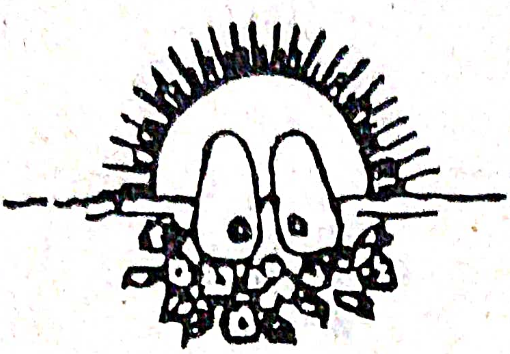

दिल क्या चीज है, आप मेरी जान लीजिए,
पर मेरी जान, पहले जान को जान लीजिए।

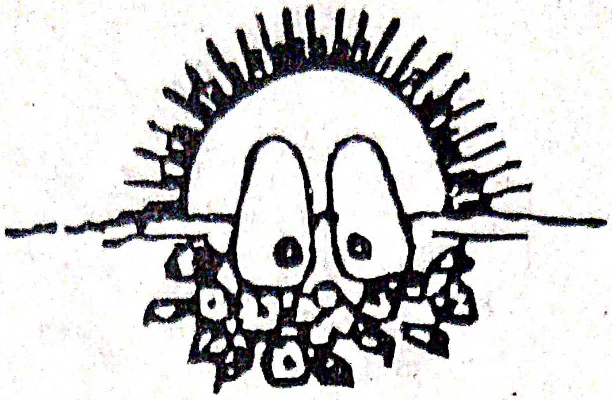

मनमानी मुँह की खाये,
माननेवाला मन की पाये।

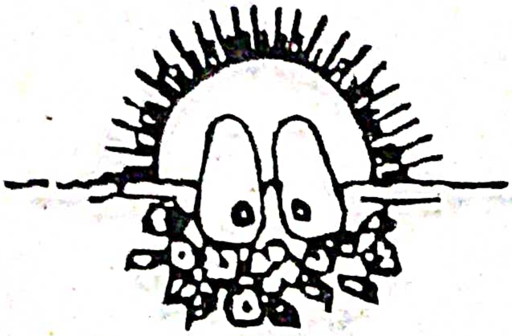

साँस बिना शरीर,
गुरु बिना जीवन,
दोनों एक समान।

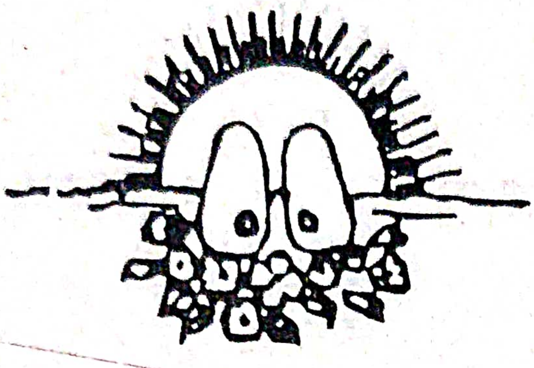

एकता-अखंडता का
दिल-दिमाग आधार,
दिल-दिमाग के मेल से
स्वर्ण - सपने साकार।

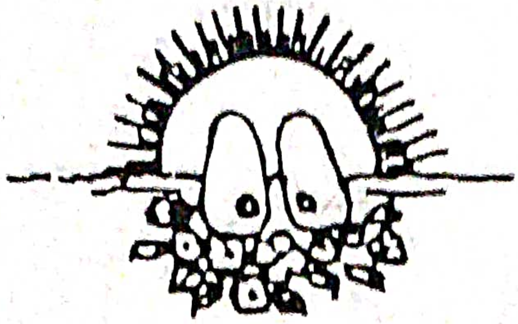

बच्चे धन, माता अन्न,
पिता मन, घर हो नंदनवन !

आसन सही है तो, शासन सही है
युग बदलेगा योगी, न कि भोगी।

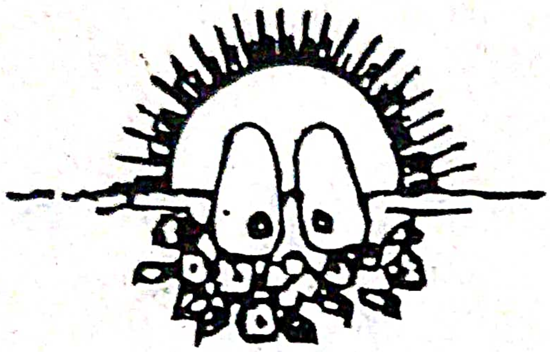

दल दल में हलचल
दे जल, पा फल।

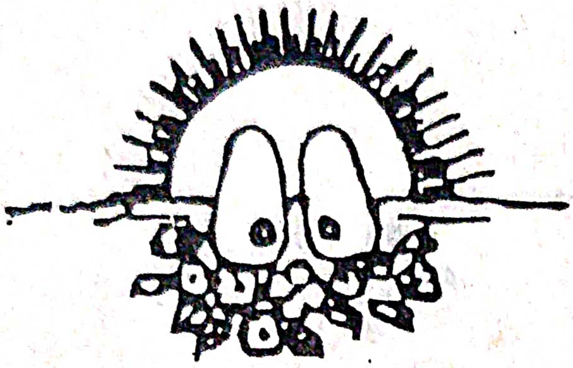

दुनियादारी से यारी
या
यारी से दुनियादारी ?

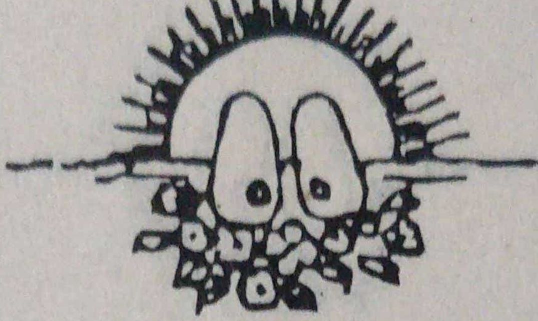

हम विश्व की बात कर रहे थे,
विश्व की बात हम में जा रही थी।
हम विश्व में नहीं जा रहे थे,
क्योंकि सिर्फ बात कर रहे थे -
दो कदम चले तो पहुँच गये,
पहुँचने वाले पहुँच गये,
समझनेवाले समझ गये।

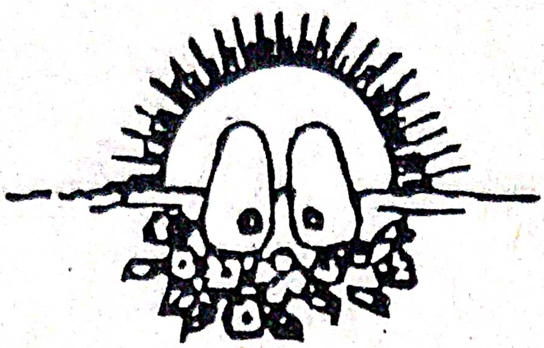

जो मान गये सो जान गये,
जो जान गये सो मान गये,
माननेवाले मिल गये,
जाननेवाले भिन्न गये,
जो मिल गये, वही जान गये!

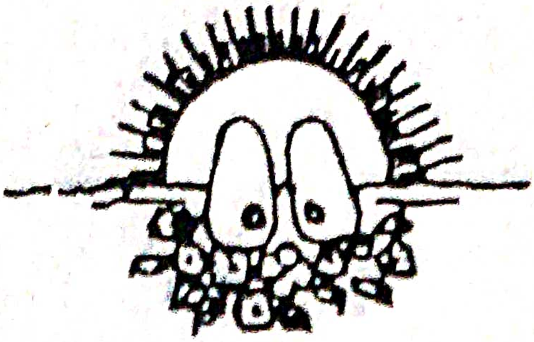

ध्यान हटा,
सर फटा,
भावना हटी,
घटना घटी।

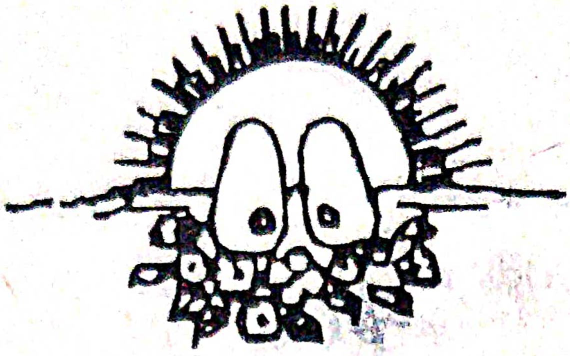

मैं पैदाइशी पाने का जिज्ञासु हूँ।
जैसे-जैसे पाता गया, वैसे-वैसे खोता गया।
जैसे-जैसे बाँटता गया, वैसे-वैसे पाता गया।

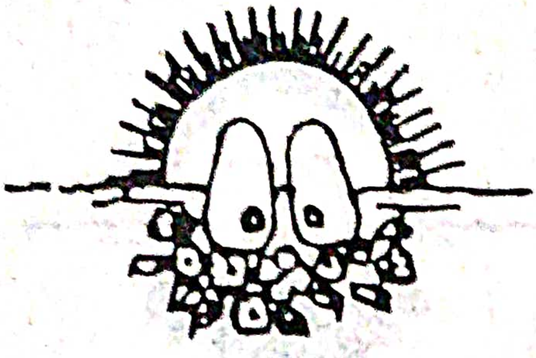

हर तैराक तैरते-तैरते डूब गया,
कोई तैराक तारते-तारते तर गया।

हर चीज समझी जाती है
कुदरत समझ में नहीं आती है,
क्योंकि समझ इसमें जाती है,
इसीलिए अनंत कहलाती है।

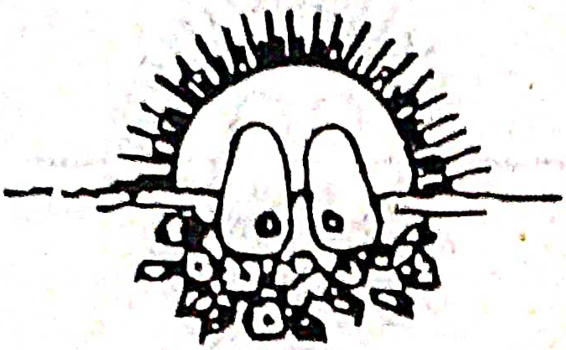

सब समझ को समझा रहे हैं,
समझ को कोई नहीं समझा।
समझ सबको समझ रही है,
सब समझदार हैं।

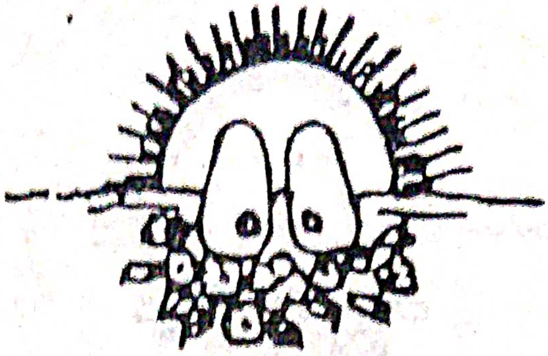

जनम एक अजूबा,
मृत्यु एक तजुरबा,
दोनों 'बा' 'बा' मिलनेपर ही
मिलते हैं शिवबाबा।

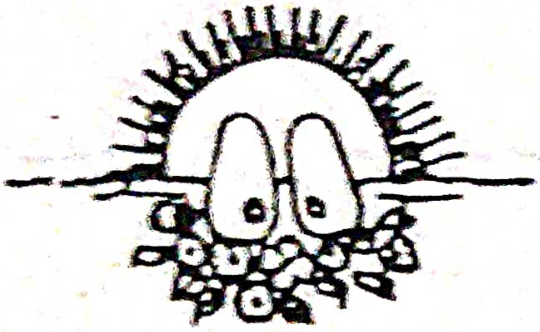

श्रेष्ठ है गुरु-शिष्य परंपरा
हर मानव राष्ट्र हो हरा-भरा।

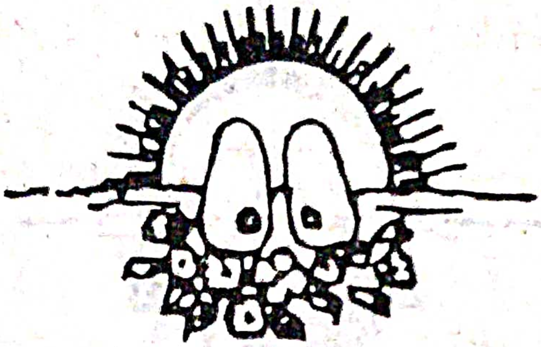

जो मन जीते,
सो जग जीते।

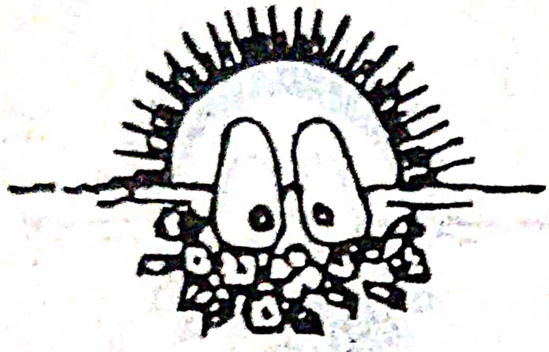

स्वार्थ में सच कड़वा होता है,
परमार्थ में सच मीठा होता है,
यही परम सत्य है।

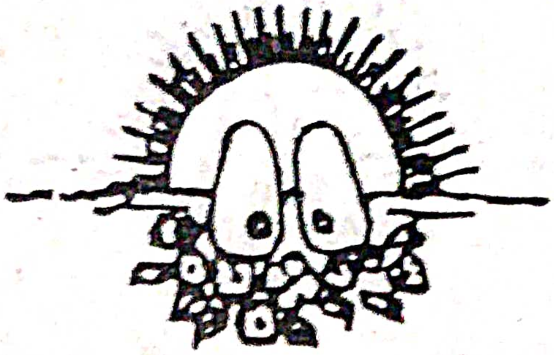

कुदरत सब की जननी है,
बुराई लेकर अच्छाई देती है,
'गुरु' उसका प्रतीक है,
विकार लेकर अच्छाइयाँ देता है।

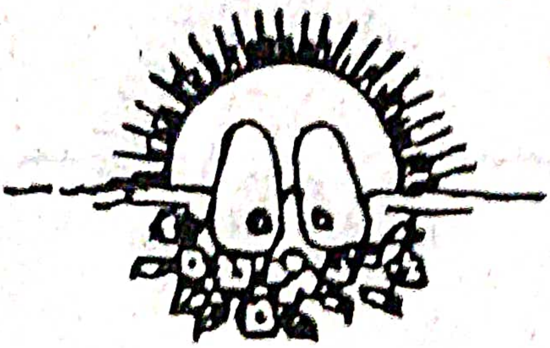

समझदार समझ जाते हैं,
दिलदार कर जाते हैं,
करनेवाले तर जाते हैं।

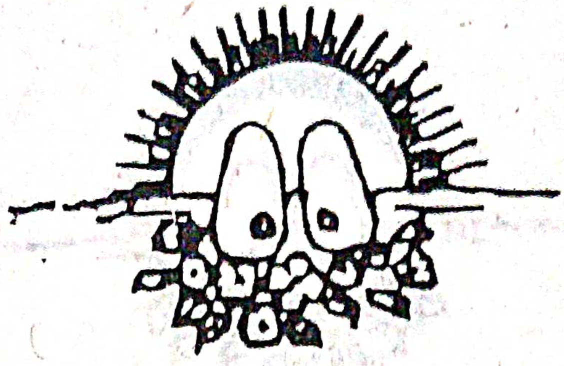

हर इन्सान है भाग्यवान
भाग्य का सत् उपयोगी
बन जाता है भगवान।

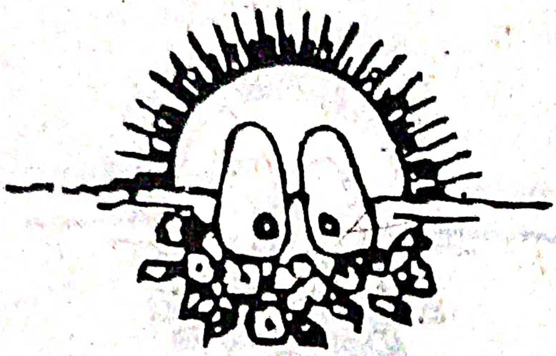

जो मन के करीब है,
वह मालिक के करीब है,
वही बड़ा अमीर है।

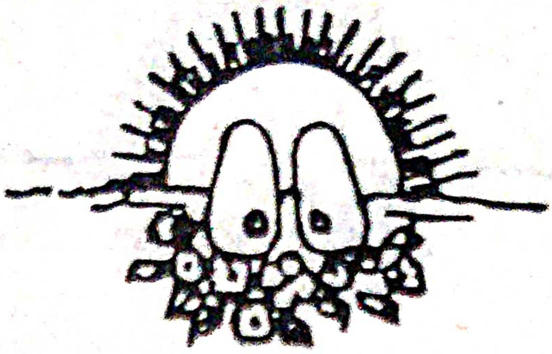

विश्वास अंधा नहीं होता है,
इन्सान अंधा हो सकता है!
विश्वास जीवन पर आधारित होता है,
जो जीवन का विष पी जाता है,
उसे विश्वास हो जाता है।

जो स्वयं को अच्छा माने वह दुखी
जो सब को अच्छा जाने वह सुखी।

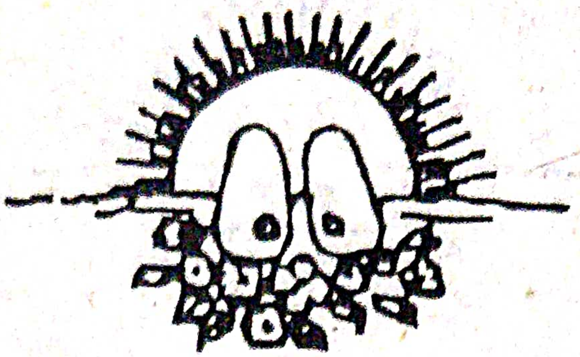

जो गुरु में समा गया,
वह सब में समा गया।

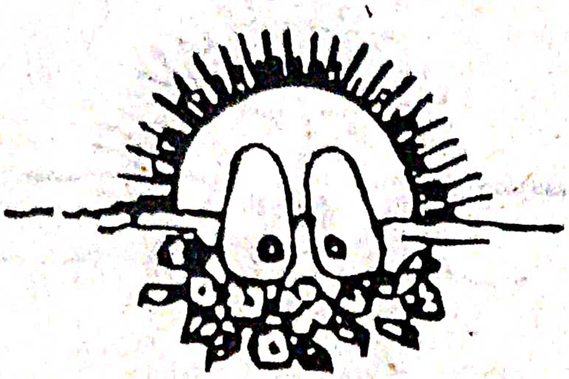

सुख-शांति धन से नहीं, मन से होती है,
मन की शांति गुरु-चरणों में होती है।

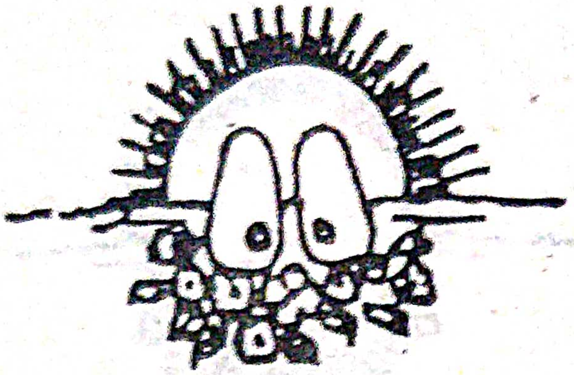

मजबूर से मजदूर भला,
स्वार्थ से परमार्थ भला।

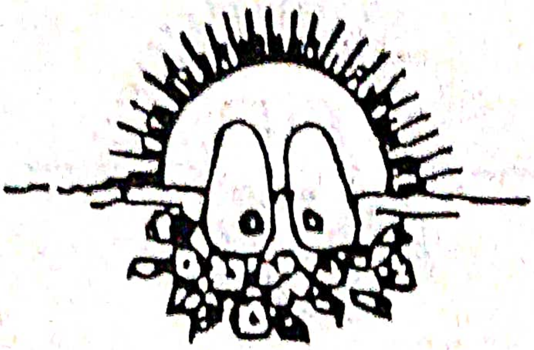

श्रेष्ठ पशु मानव है,
गुरुकृपा से महान है।

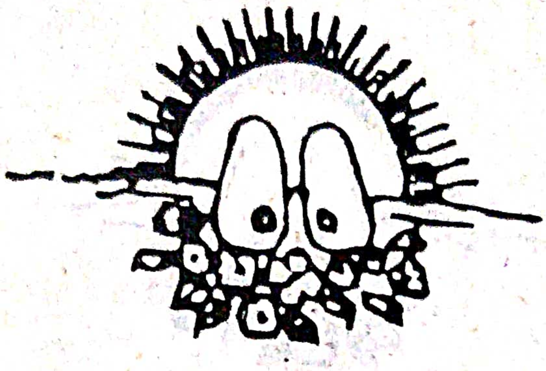

पूरे होंगे अरमान,
सब को दे सम्मान।

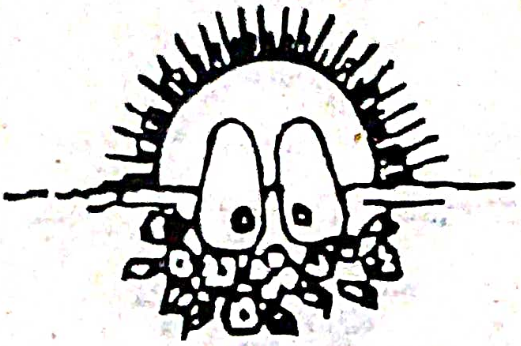

निराकार को साकार
करता है सेवाकार।

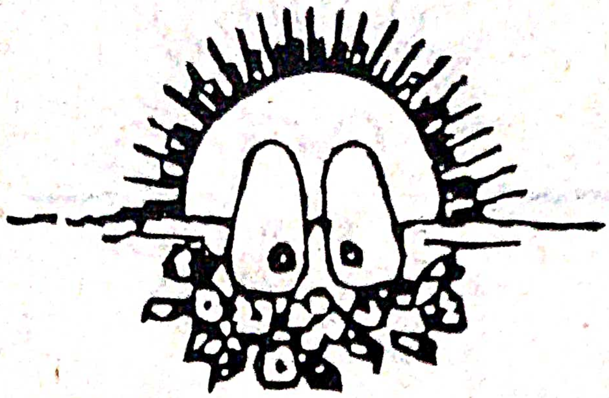

सब की सेवा -
रब की सेवा।

करने से जानता है,
कराने से मानता है।

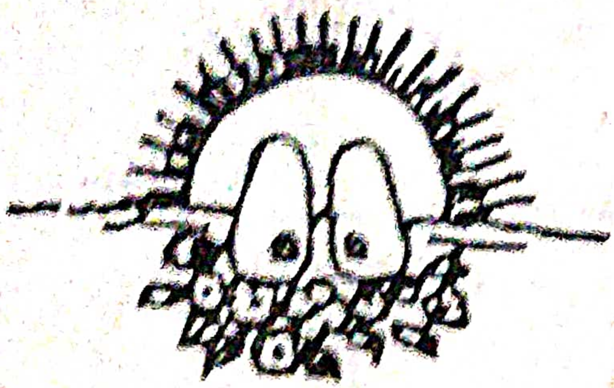

जीवन तो भाव है,
जीविका भाव-ताव है।

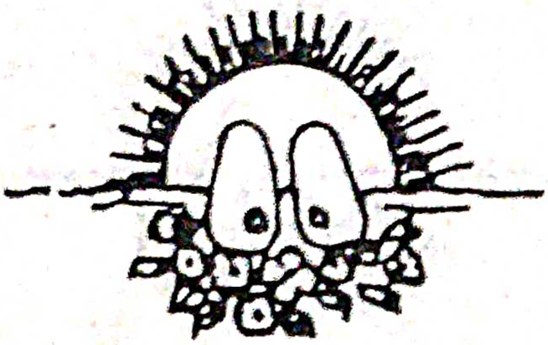

मानो तो है ही महान
नहीं तो भ्रम की खान।

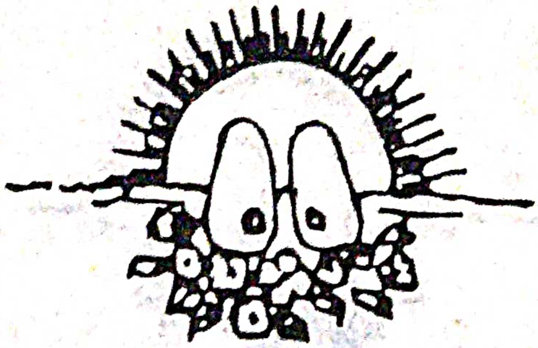

मानी मन से
कि
मनमानी से ?

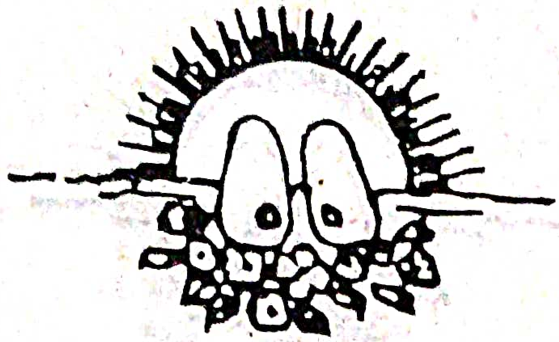

बूँद, बूँद सागर को तरसे
मिले तो सागर हो जाये।

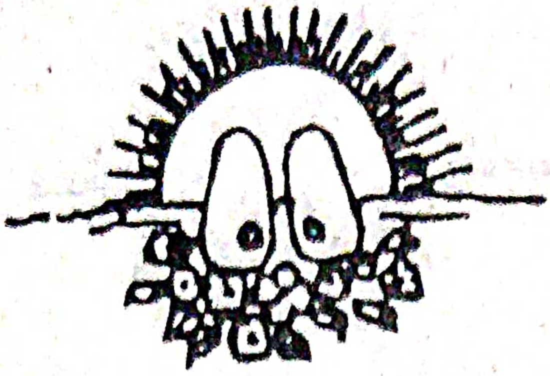

साँसों से तन
अन्न से मन
जल से जीव
योग से कर्म।

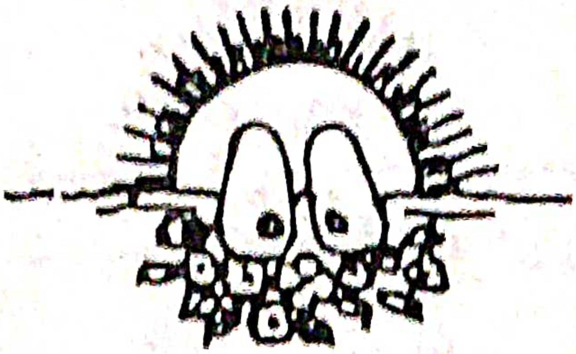

बातचीत में हारजीत,
सहयोग में जीत ही जीत।

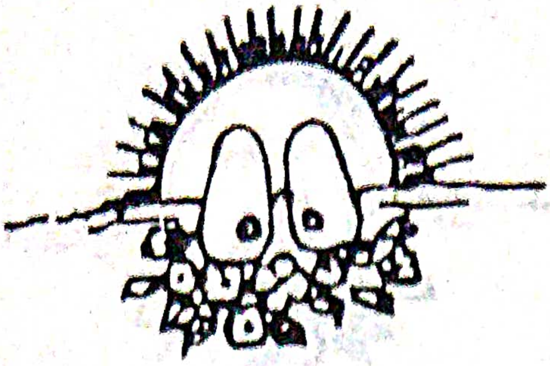

शीश झुके शिष्य हो जाये
शिष्य हो जाये, सब पा जाये।

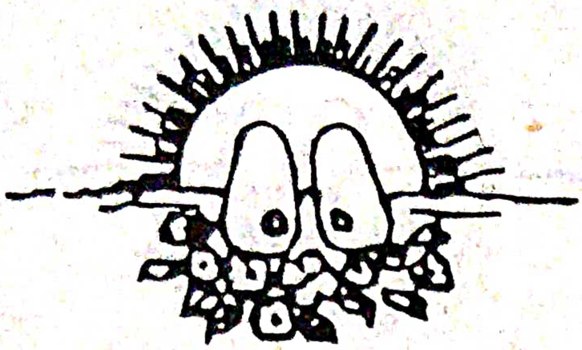

गुरु-शिष्य दोनों समान,
जो जान जाये सो महान।

क्रोध की जड़ है विरोध।

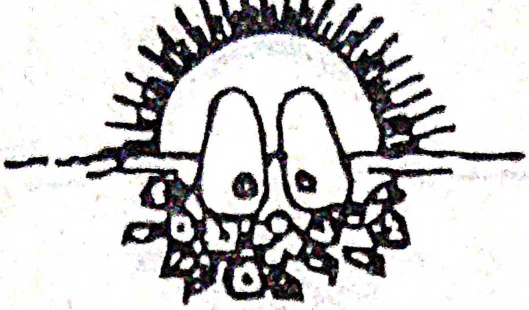

गाली-गलौज से खामोश भला,
हाथ उठाने से जोड़ना भला।

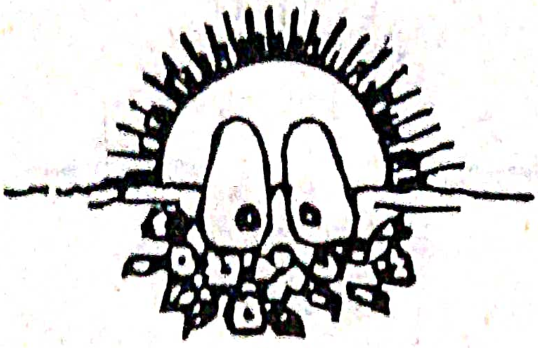

हर वादविवाद में है आतंकवाद,
श्रेष्ठ है धन्यवाद, आशीर्वाद।

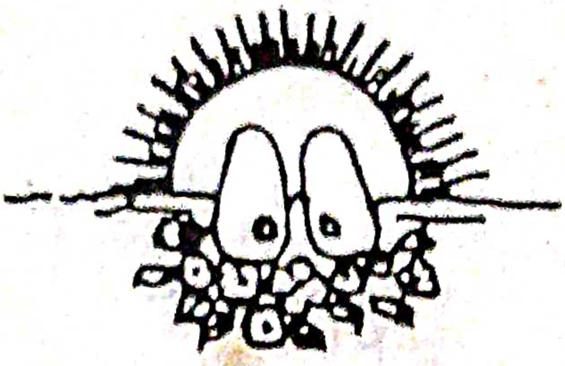

ज्ञान, बुद्धि से विकास
श्रद्धा, प्रेम में निवास।

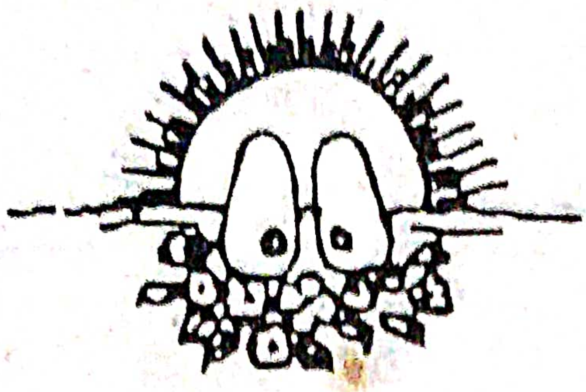

शीश दे, शिष्य हो,
शिष्य दे, शिव हो,
शिव दे, गुरु हो,
गुरु दे, महा गुरु हो।

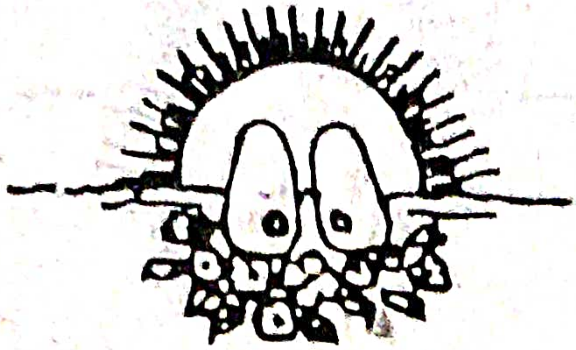

कुबुद्धि कुकर्मों से
सत्बुद्धि सत्कर्मों से
प्राप्त होती है

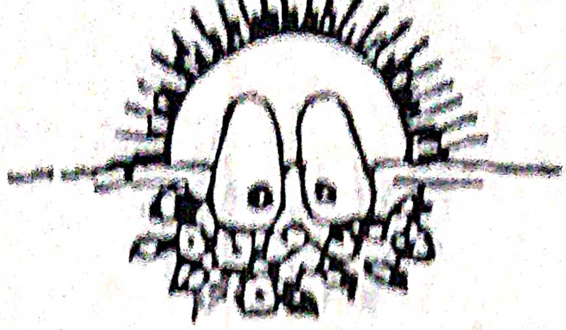

गुरु तो सब का -
तर गया वह
जो गुरु का।

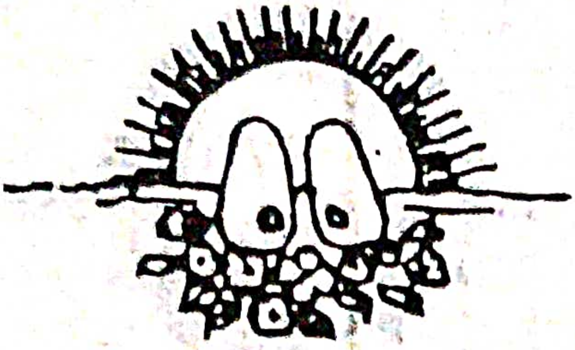

जो गुरु पा जाये,
वह भाग्यवान हो जाये!
जो विष पी जाये,
वह भगवान हो जाये!
जो विष पी कर अमृत दे,
वह गुरु हो जाये,
जो गुरु बनाये,
वह महागुरु हो जाये।

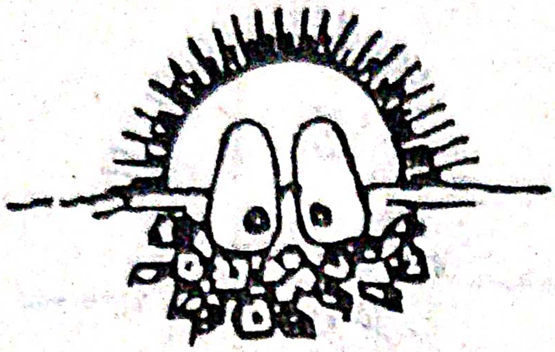

दिमाग हो दिल से,
कर्म हो भाव से।

ज्ञान सुनाई देता है,
आचरण दिखायी देता है।

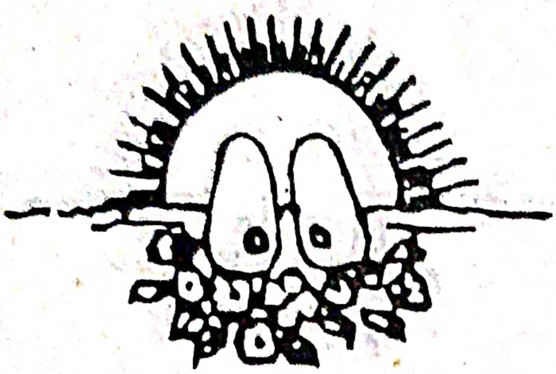

सत्य है आत्मा,
शरीर है संग !
दोनों के मेल से
होता सत्संग !
नहीं तो जनम जनम
होती रहेगी जंग ।

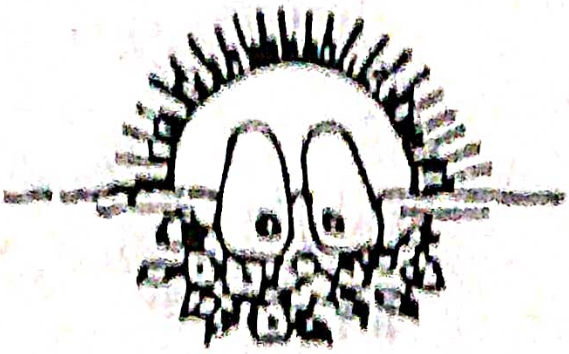

सब बहुत समझदार हैं।
अन्दर की चीज़ बाहर ढूंढ रहे हैं।
बाहर की चीज़ अन्दर ढूंढ रहे हैं।
ढूंढते-ढूंढते खुद खो रहे हैं,
जो खुद को खुद जाने,
वही दरअसल पा रहे हैं।

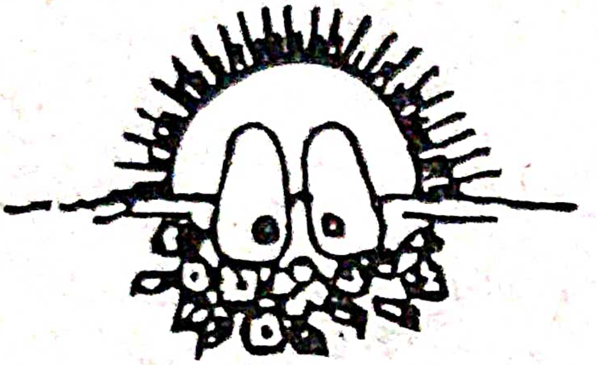

जो गुरु का हो गया,
वह सब का हो गया,
जो सब का हो गया,
वह गुरु का हो गया।

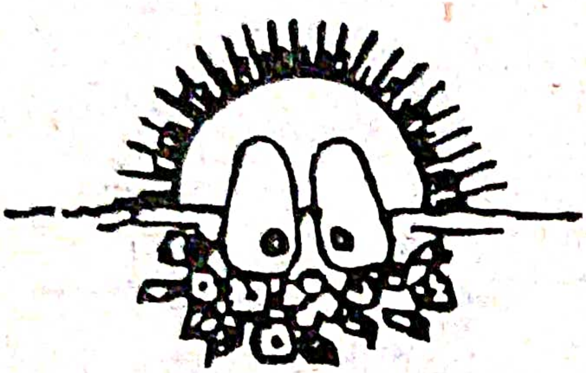

रोड़े न बन राह में,
फूल खिलते हैं धूल में।

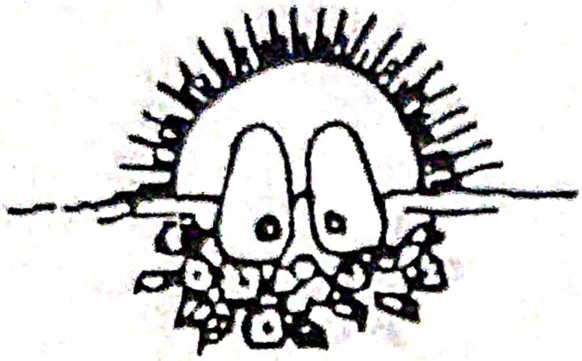

बीता कल, आता कल
इन्हीं में सब लगाते अक्ल।
बिता जाये हर पल
सब में है अक्ल।
गुरु ध्यान में चलता चल
नहीं तो जल में जल।

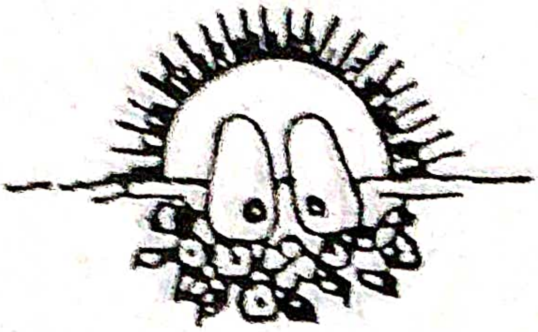

दुखों की जड़ है मृगतृष्णा
सब का हल है कृष्णाकृष्णा।

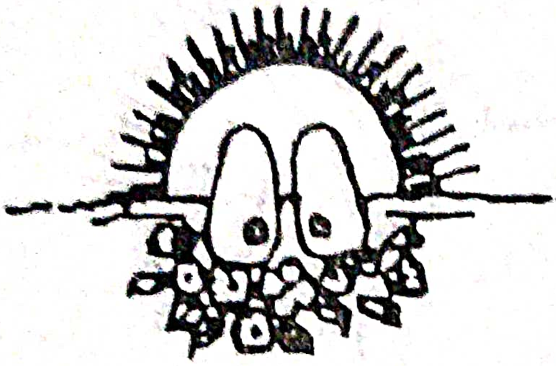

जो हरि का, सो हर का
जो हर का, सो हरि का।

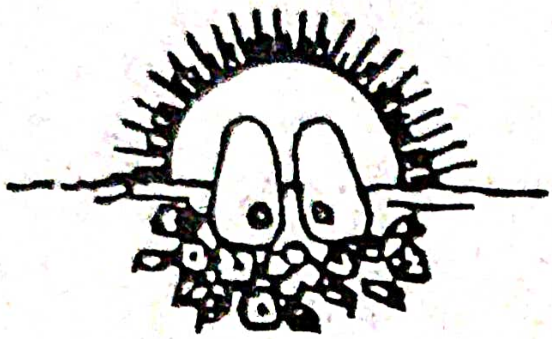

जिंदगी भर जलाता रहा शमा,
पर माँग न पाया क्षमा।

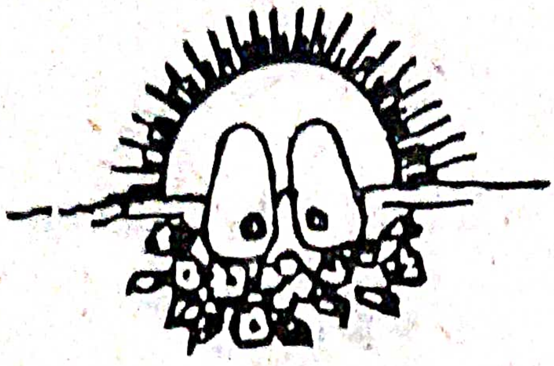

वह इतना सरल है कि
हर सरलता को जान लेता है।

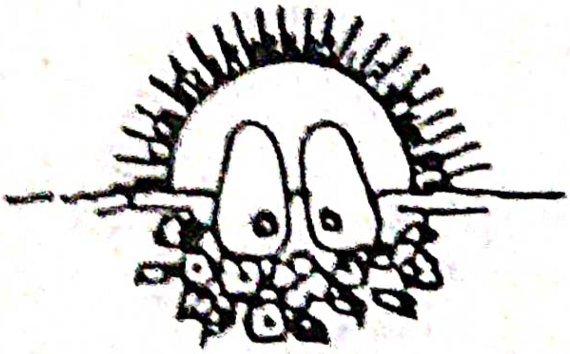

तब तक था मेरा चित्त
होता रहा मैं चित
देखा जब दूसरों का हित
जाग उठा मेरा चित।

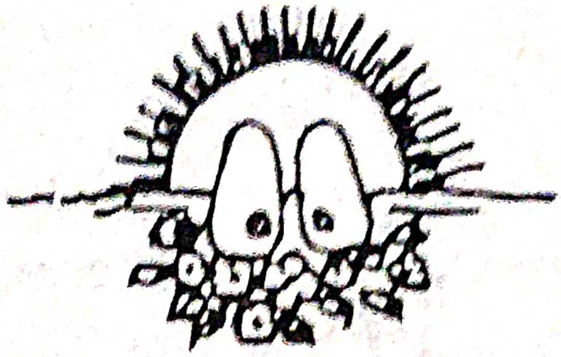

भावनाओं की लहरों के सागर में,
सूर्य उदय होते ही -
हर प्राणी तैरने निकला,
सूर्य अस्त होते ही,
हर प्राणी डूब गया।
और इस तैरने-डूबने, डूबने-तैरने को ही
जिंदगी समझ बैठा।

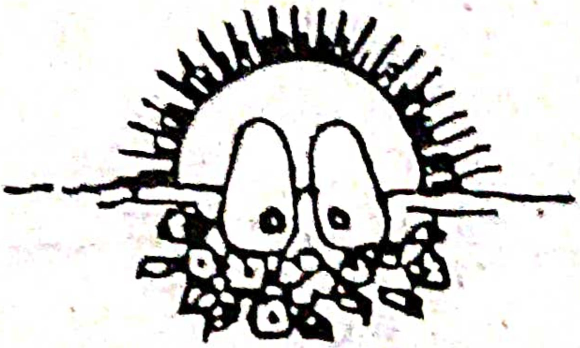

सब मिलने जुलने की
बात करते हैं।
बिछड़े सभी नजर आते हैं
बहुत भटकने के बाद
किसी सूरदास से मालूम हुआ,
वह बात कहने की है,
यह बात देखने की है।

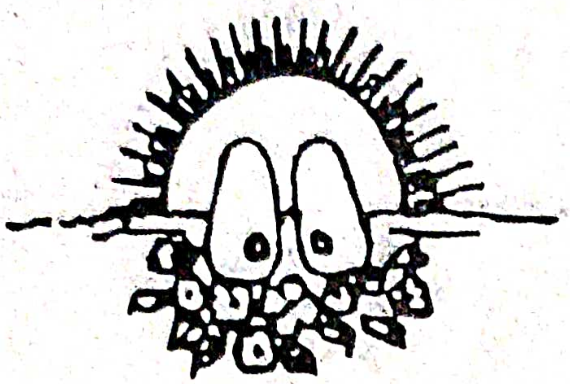

जनम-जनम से मन दौड़ाता रहा तन को,
सेवा में लग गया तो मन शांत हो गया।

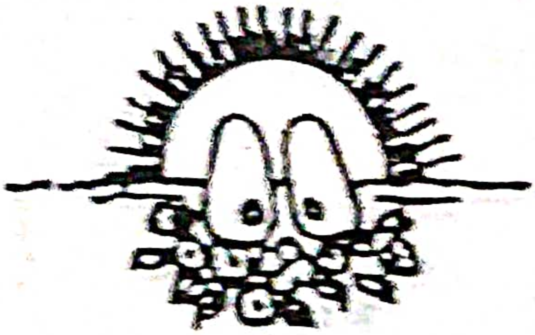

बात-बात में बात बढ़ती है,

करते-करते बात बनती है।

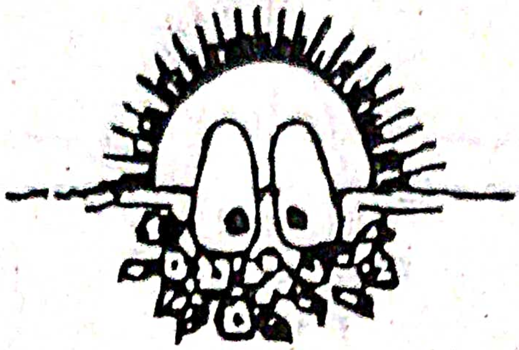

सब अपनी अपनी उलझनों में व्यस्त हैं,
जो आ गये गुरु-चरणों में वे मस्त हैं।

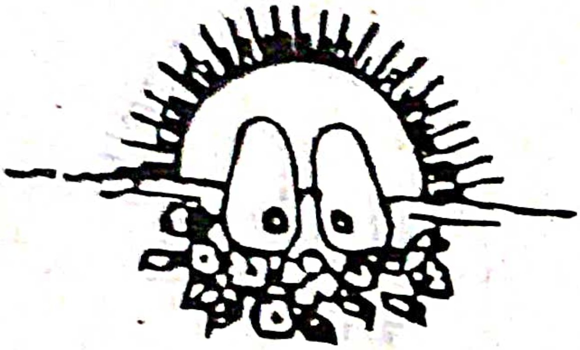

गुप्त सेवा,
पूर्ण मेवा।

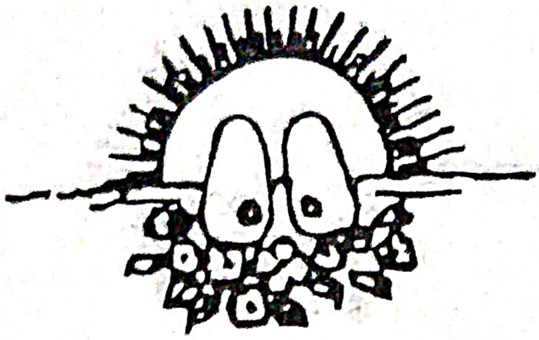

जनम-जनम से अपनी चलाता हूँ,
सब समझता-जानता हूँ
सुनने-बोलने में यही कहता हूँ,
कि चलती उस मालिक की है,
फिर भी अपनी चलाता हूँ।
अपने ही बनाये चक्कर में
खुद फँस जाता हूँ।
फिर मालिक-मालिक करता हूँ।
ये चक्कर तब तक है जब तक मैं हूँ
'मैं' नहीं तो 'वह' ही 'वह' है।

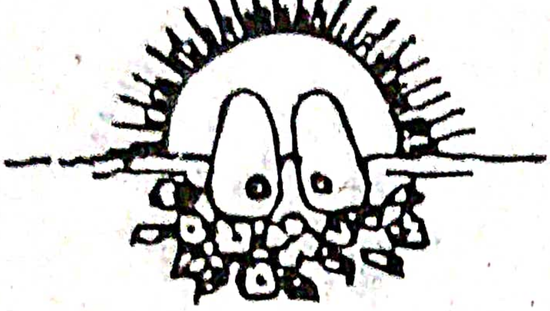

जो गुरु को माने,
वह जग को जाने।

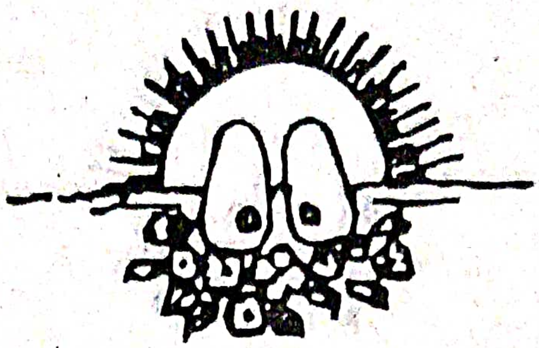

प्राप्ति को गुप्त रखना,
मत करना इजहार।
वरना दुनिया करेगी,
जीना भी दुश्वार।

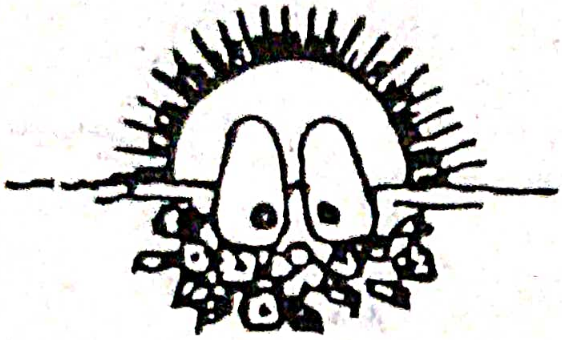

लीलाएँ हैं खेल,
खेलते - खेलते निकले मन का मैल।

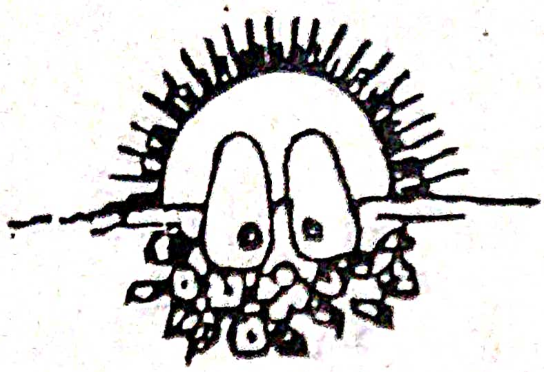

मानव वासना,
मालिक उपासना।

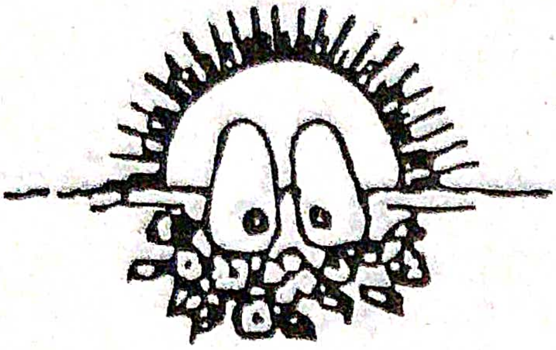

आत्मा है धर्म,
शरीर है कर्म,
दोनों के मेल से,
दूर होता भ्रम।

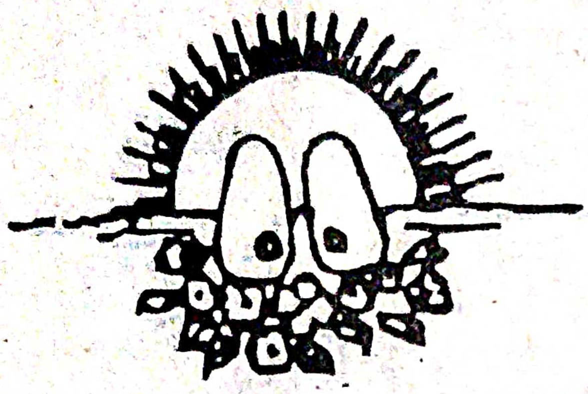

जो होता है, वह छलकता है!
जो नहीं होता वह बोलता है।

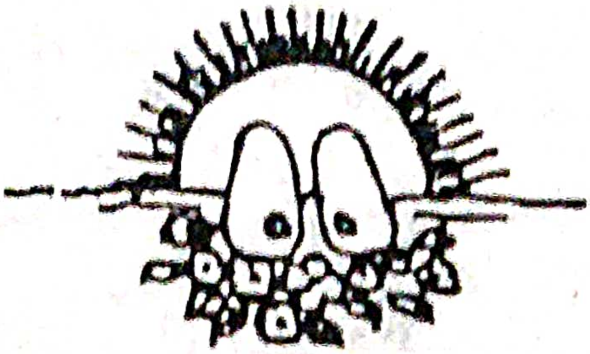

जब माना गुरुवार,
खुले मन के द्वार।

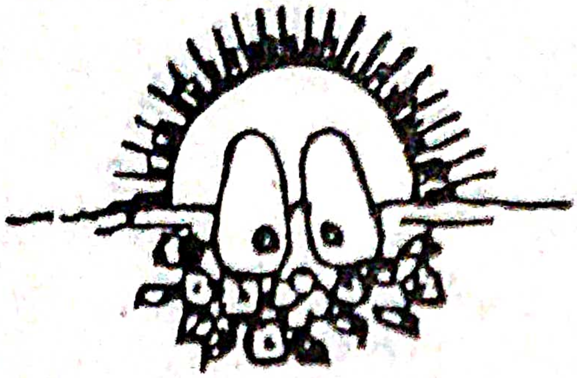

मालिक को जानते-जानते चली जायेगी जान!
खुद को जानने से मालिक की होगी पहचान!

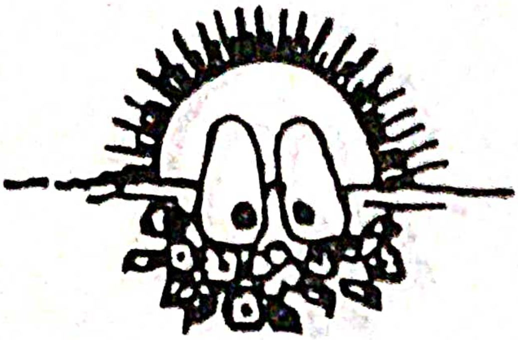

सोये तो सोये,
जागे तो जागे,
यह नहीं कि -
जागते हुए सोये।

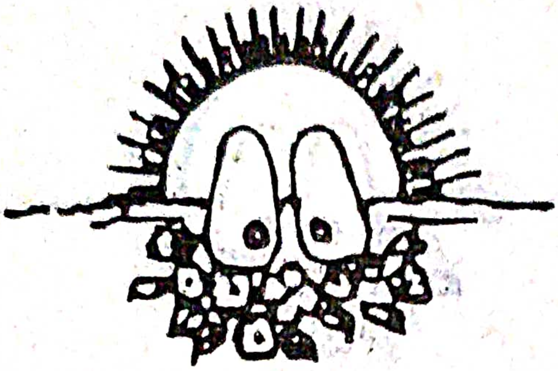

भावना सहयोग की,
वाणी प्रेम की,
कर्म मर्यादा का,
धर्म मानवता का।

मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार दे,
बल, सद्बुद्धि, विद्या, धन ले।

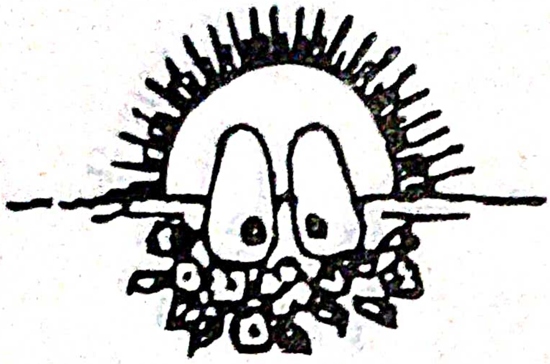

राम-राम करते-करते,
रावण राज हो गया!
'लक्ष्य' लक्ष्मण हो जाये,
तो रामराज्य आ जाये।

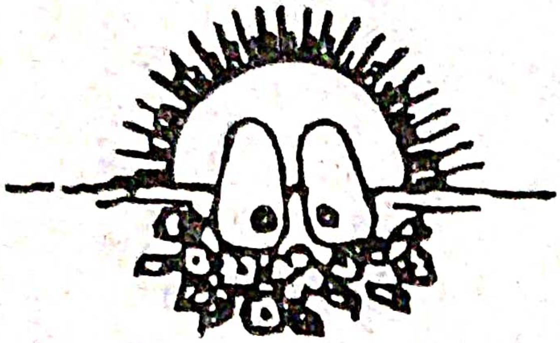

मैं हूँ आत्मा,
तू है परमात्मा,
दोनों मिले, बन गये महात्मा।

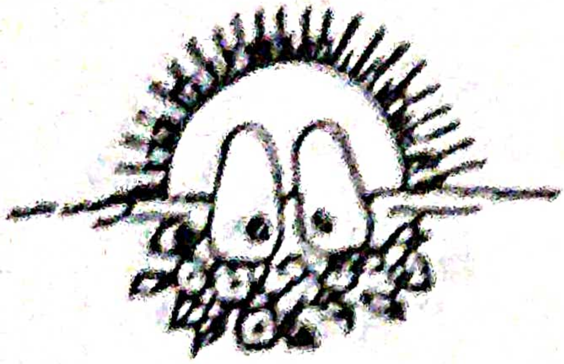

जहाँ देखो, धरती आसमाँ मिला नजर आता है।
मिलने जाओ तो दूर नजर आता है।
वह जब चाहता है मिल जाता है।
वही होता है जो वह चाहता है।

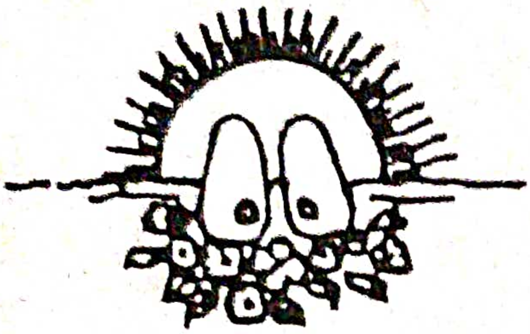

दर्शन करते-करते तेरे
दर्शन हो ही गये मेरे।

ध्यान मूलं गुरुर्मूर्ति।
पूजा मूलं गुरौपदम्।
मंत्र मूलं गुरुवाक्यम्।
मोक्ष मूलं गुरौकृपा।